ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-1*JUNE-2014

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण प्रदूषण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

मानवेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
दी0द0उ0गो0वि0वि0
गोरखपुर

अंजू सिंह
शोध छात्रा
समाजशास्त्र विभाग
बरेली कालेज, बरेली

सारांश

बढ़ती जनसंख्या और उपभोगवादी संस्कृति जिसने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन, पर्यावरण प्रदूषण और बर्बादी को जन्म दिया है। बड़े–बड़े बांध बनाने के लिए कृषि भूमि तथा वनों का बड़े पैमाने पर किया जा रहा विनाश अब तथ्यों के रूप में मनुष्य के सामने आ रहा है। अरामदायक और विलासितापूर्ण जीवनशैली के फलस्वरूप दिनो–दिन बढ़ता तापमान पृथ्वी पर कहर बरपा रहा है। जिन क्षेत्रों में एक बार सूखा, बाढ़, चक्रवात, भूस्खलन जैसी समस्याएं आती हैं उन्हीं क्षेत्रों में ये समस्याएं बार–बार आती हैं। औद्योगीकरण के चलते रोजगार के नये अवसर खुले और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई, परन्तु इसने पर्यावरण को भी काफी नुकसान पहुँचाया। आज स्थिति यह है कि हमारी नदियाँ, समुंद्र, भू–जल, वायु सभी प्रदूषित हो चुके हैं। औद्योगिक इकाइयों से निकले प्रदूषित तत्वों से हमारे प्राकृतिक संसाधन ही नहीं बल्कि समूचा वायुमण्डल विषाक्त होता जा रहा है। जिसमें समय रहते सुधार करना अति आवश्यक हो गया है। अगर यही क्रम चलता रहा तो तापमान बढ़ने से पहाड़ो पर जमी बर्फ तेजी से पिघलेगी जिससे भीषण तबाही मच सकती है और जनजीवन अस्त–व्यस्त हो सकता है।

मुख्य शब्द : भीषण, विलासितापूर्ण, अंधाधुंध, संसाधनों

प्रस्तावना

पर्यावरण और मानव संस्कृति में गहरा सम्बन्ध है यदि मनुष्य प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन न करें तथा प्रकृति को अपनी इच्छानुसार बदलने और उस पर नियन्त्रण करने का प्रयास न करें तो प्राकृतिक विभीषिका से विश्व को बचाया जा सकता है। किन्तु मोहवश प्रकृति के साथ छेडछाड के फलस्वरूप प्रकृति में जो परिवर्तन आते हैं। वे मनुष्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। यह सिद्धान्त मानव एवं प्रकृति के सम्बन्ध में भी पूरी तरह से खरा उतरता है। प्रकृति के अंधाधुन्ध दोहन से अनेकों समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। एक समस्या हल हो जाती है तो वहीं चार नई समस्याएं पैदा हो जाती है। विकास और आधुनिकता की इस दौड़ में भले हम चाँद पर पहुँच कर अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं किन्तु सत्यता इससे विपरीत है। विकास के नये–नये प्रतिमान स्थापित होने के बाबजूद मानव पर्यावरण को नश्ट कर अपनी ना समझी का ही परिचय दे रहे है। मनुष्य ने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इतना अधिक विकास कर लिया है कि वह अब अपने जीवन को पूर्णतः आरामदायक स्थिति में ले जाना चाहता है। किन्तु इन सब बातों के पीछे सत्यता यह है कि मनुष्य अपनी आरामदायक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ क्रूरता का रूख अपनाता जा रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों के बाद आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन है। जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों का साधन और साध्य दोनों होती है। जनसंख्या में गुणात्मक वृद्धि का आर्थिक पर्यावरण पर अनुकूल तथा संख्यात्मक वृद्धि का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारत में मानव संसाधन आर्थिक विकास में अवरोध सिद्ध हुआ है यद्यपि जनाधिक्य के कारण भारत दुनिया के बड़े बाजार के रूप में उभरा है। सस्ती श्रम शक्ति के कारण विदेशी निवेशकों का आर्कषण बढ़ रहा है। किन्तु जनसंख्या की बहुलता से अनेकों समस्याएं यथा गरीबीं, बेरोजगारी एवं पिछड़ापन मुखर हो गई है। इससे आर्थिक प्रगति जनसंख्या रूपी बाढ़ में बह जाती है। वर्ष 2050 में भारत में जनसंख्या 162.8 करोड़ हो जाएगी। दूसरे स्थान पर चीन की जनसंख्या 139.4 करोड़, तीसरे स्थान पर अमेरिका की जनसंख्या 142.2 करोड़ होगी तथा चौथे स्थान पर पाकिस्तान होगा (शर्मा 2006)।

भारत के पास विश्व की मात्र 2.4 प्रतिशत भूमि पर विश्व की 17 प्रतिशत आबादी रहती है। भारत में जनघनत्व प्रति वर्ग मिमी0 324 है। जबकि

विश्व में 45, एशिया में 116 तथा चीन 133 प्रति वर्ग मिमी0 है। वर्तमान में दस करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले 11 देश हैं। जनसंख्या स्थिरीकरण के द्वारा ही पर्यावरण सुरक्षा सम्भव हो सकेगी (अली 2006) । औद्योगिक क्रान्ति ने विश्व मानव के संस्कारो को भी बदला है संस्कृतियों में भी प्रदूषण ने प्रवेश किया है। भारत में भी सांस्कृतिक प्रदूषण हुआ है। समय के साथ हमारे सांस्कृतिक संस्कार स्वतः बदलें। भारतीयता का अक्षुण्य रूप परिस्थितियों एवं नई स्थितियों के साथ बदल रहा है।यह शोचनीय विषय है (नौटियाल 2012)।

वर्तमान में आर्थिक विकास के फलस्वरूप औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों का विनाश एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन हो रहा है। इसके फलस्वरूप मानव एवं प्रकृति के मध्य स्थापित संतुलन बिगड़ गया है। आधुनिकता, विकास एवं सभ्यता की अंधी दौड़ में दौड़ रहे वर्तमान सभ्य समाज ने कुछ ऐसे कार्य किये है जो मानव की नजर में विकास का प्रतीक है। परन्तु इसके लिए किये गये निर्णय आत्मघाती सिद्ध हुए हैं, जो पर्यावरण गुणवत्ता के ह्रास के प्रमुख कारण है। सभी पर्यावरणीय समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन करें तो इनमें केन्द्रीय समस्या जनसंख्या वृद्धि की ही है। जिससे अनेक समस्याएं जन्म लेती है। जैसे–बेरोजगारी, अशिक्षा, खाद्यान्न की कमी, गरीबी, ऋण, मंहगाई, असमान वितरण, क्रय शक्ति की कमी, बाल श्रम को बढ़ावा, चिकित्सा सुविधा का अभाव एवं बीमारी का आधिक्य, पौष्टिक भोजन का अभाव आदि।

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण प्रदूषण में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है क्योंकि मनुष्य की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक संसाधनों का उपभोग करने की रही है। जिसके फलस्वरूप प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। मनुष्य ने जिन क्षेत्रों में प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ की है वहॉ उसे भीषण तबाही का और अनेक संकटो का सामना करना पड़ा है। विभिन्न परमाणु परीक्षण युद्ध, अमेरिका द्वारा हिरोशिमा नागासाकी पर गिराया जाने वाला परमाणु बम, ईराक–ईरान पर हमला, विभिन्न खगोलीय घटनाएं आदि मनुष्य के अपने लाभ का ही परिणाम है। जिसका प्रभाव प्रकृति के समस्त जीवो तथा क्रियाओं पर पड़ता है। जिसमें प्राकृतिक असंतुलन पैदा होता है। जापान में भयंकर बाढ़ तथा 2004 में आई सुनामी लहरो से भीषण त्रासदी पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न पर्यावरण असंतुलन का ही परिणाम थी। भारत में 26 जुलाई 2005 में मुम्बई में 24 में 994 मिमी0 की भारी बारिश से आई प्रलय, 06 अगस्त 2010 में लेह शंकर में बादल फटने से 250मिमी0 बारिश से आई तबाही, 31 जुलाई 2014 में महाराष्ट्र में पूणे के मालिण गॉव में बादल फटने से 250 मिमी0 बारिश से आई तबाही से पूरे गॉव का पहाड़ के नीचे दब जाना, बिहार तथा आसाम में बाढ़ आदि सभी घटनाएं पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न हुए पर्यावरण असंतुलन का ही परिणाम है।

अमेरिका जनसंख्या ब्यूरों के इन्टरनेशनल प्रोग्राम सेन्टर की एक रिपोर्ट ने जनसंख्या वृद्धि की तीव्रता को देखते हुए अक्टूबर 2012 तक 7 अरब होने की घोषणा की है। भारत के संदर्भ में वर्श 2030 तक चीन को पीछे छोड़कर भारत विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जाएगा। हम प्रकृति की संतान है। स्वामी नहीं – मानव सभ्य हो या बर्बर, प्रकृति की संतान है। उसका स्वामी नहीं। यदि उसे अपने पर्यावरण पर प्रभुत्व बनाये रखना है तो उसके लिए कतिपय प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलना आवश्यक है। वह जब प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करता है। तभी वह उस प्राकृतिक पर्यावरण को नश्ट कर बैठता है। जिस पर उसका अपना जीवन निर्भर है। और जब उसका पर्यावरण तेजी से बिगड़ने लगता है तब उसकी सभ्यता का पतन भी होने लगता है। किसी ने यह कहकर इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा बताई है कि – सभ्य मानव पृथ्वी के एक छोर से चलकर दूसरे छोर पर पहुँच गया है और वह जहाँ से भी गुजरता है। वहाँ भूमि मरूस्थल हो गई है शुभाखर के अनुसार 'अपनी वैज्ञानिक व तकनीकी शक्ति के मुखरित होने के उत्साह में आधुनिक मानव ने उत्पादन की ऐसी प्रणाली का विकास कर लिया है जो प्रकृति के साथ अनाचार करती है। और ऐसे समाज की रचना कर ली है जो मनुष्य को विकृत करती है।' गाँधी जी की दृष्टि में–यह धरती अपने प्रत्येक निवासी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यथेश्ट साधन उपलब्ध करती है। लेकिन हर व्यक्ति के लालच की पूर्ति नहीं कर सकती। पर्यावरण का मानव प्रभाव के सम्बन्ध में इन्दिरा गाँधी ने कहा था– आधुनिक युद्ध जैसी बेतुकी बात और कोई नहीं हो सकती। भयंकर हथियार जितनी शीघ्रता से विनाश करते है। उतनी शीघ्रता से और कोई हथियार कार्य नहीं करता क्योंकि ये भयंकर हथियार न केवल मारते है, बल्कि जीवित अजन्में शिशुओं को भी जीवित रहते हुए मार देते हैं। विकृत और अपंग कर देते हैं।यह भूमि को विशाक्त कर देते हैं। कुरूपता अनउर्वरता, बंजरता, का लम्बा सिलसिला अपने पीछे स्थायी तौर पर छोड़ देते हैं।

मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण – मानव का स्वास्थ्य स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण पर निर्भर है। विगत शताब्दियों में मानवीय गतिविधियों के पर्यावरण पर तीव्रता से प्रहार के कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है। भूमिगत संसाधन, वन संसाधन, जल संसाधन, कोयला एवं पेट्रोलियम का युद्ध स्तर पर दोहन करने से एक ओर इनकी घटती मात्रा द्वारा पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया और दूसरी ओर इनसे पर्यावरणीय गुणवत्ता में ह्रास हुआ है जिस पर प्रत्यक्षतः मानव स्वास्थ्य निर्भर है। इस प्रकार मानव जीवन पूर्णता पर्यावरणीय तंत्र से सम्बद्ध है। पश्चिमी राष्ट्र अपव्यय प्रदूषण और धरती के संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की भयानक कीमत पर ही अपने जीवन यापन का स्तर ऊँचा बनायें रख पा रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि कर विस्फोटक स्थिति परिस्थितिकी संतुलन के लिए एक चुनौती है। विश्व की जनसंख्या इस शताब्दी के अन्त तक लगभग दोगुनी होने की सम्भावना है। एक राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति उसकी भूमि, जल, वनों, खाद्यान्नों, पशु, सम्पत्ति या डालरों में निहित न होकर उस राष्ट्र के धनी और प्रसन्न जन समुदाय में निहित होती है।

शहरीकरण और पर्यावरण, संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा प्रकाशित दुनिया के 200 शहरों के अध्ययन पर आधारित शहरीकरण की''वैश्विक चुनौतियाँ'' नामक रिपोर्ट में विकासशील देशों में विस्फोटक गति से हो रहे शहरीकरण पर चिंता प्रकट की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार

आगामी दो दशकों में 95 प्रतिशत शहरीकरण विकासशील देशों में होगा। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वर्श 2025 तक देश की लगभग आधी जनंसख्या शहरी होगी। इस परिदृश्य में भारत में जैसे अधिक तथा तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले देशों के लिए इसका प्रबंधन अत्यावश्यक है। क्योंकि शहरीकरण अपने साथ कई समस्याएं लाता है। जैसे–जैसे गांवों की आबादी शहरों की ओर पलायन कर रही है। वैसे–वैसे शहरों में पर्यावरण भी अधिक प्रदूषित हो रहा है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था का लक्षण रही है। वर्ष 2001 की जनसंख्या के आंकड़े प्रदर्शित करते है।विगत दशक में भारत जनसंख्या वृद्धि दर 21.32 प्रतिशत रही है।

सारणी संख्या 0.1

भारत में शहरों की संख्या एवं वृद्धि दर

वर्ष	भारत में शहरों की संख्या	वृद्धि दर 1951 की तुलना में
1951	2843	—
1961	2365	−16.8
1971	2590	−8.9
1981	3378	+18.8
1991	3768	+32.5
2001	5161	+81.5

स्रोत

Statistical outline of India 2004-05 Tata Services Limited Mumbai-2005

सारणी संख्या 0.2

भारत में शहरों की संख्या (प्रतिशत)

वर्ष	शहरी जनसंख्या
1951	17.03
1961	18.00
1971	20.02
1981	23.03
1991	25.07
2001	27.08

स्रोत

Statistical outline of India 2004-05 Tata Services Limited Mumbai-2005

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण प्रदूषण

बढ़ती हुई जनसंख्या से वाहनों की मात्रा में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। जिससे वायु प्रदूषण तो बढ़ा ही है, किन्तु शहरों बढ़ती हुई जनंसख्या एवं वाहनों की वृद्धि के कारण ध्वनि प्रदूषण भी तीव्र गति से बढ़ा है। इस कारण शहरों में मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन बेचैनी, कार्य में नीरसता, श्वास सम्बन्धी बीमारियां तथा श्रवण शक्ति में कमी जैसे रोगों में वृद्धि हो रही है। यह एक स्थापित तथ्य है कि शहरीकरण एवं पर्यावरण की गुणवत्ता दोनों में ऋणात्मक सह–सम्बंध है। यद्यपि बढ़ता हुआ शहरीकरण विकास का द्योतक है परन्तु साथ ही इसने अनेक पर्यावरणीय चुनौतियां उत्पन्न कर दी है।

1. जनसंख्या वृद्धि से संसाधनों का अत्याधिक दोहन होता है। जिससे उनकी कमी हो रही है। शहरों में पेयजल की कमी हो रही है। शहरों में पेयजल की कमी इनका ज्वलन्त उदाहरण है।
2. बढ़ी हुई जनसंख्या से शहरों में गन्दगी फैल रही है। जो कचरा, प्रबंधन के रूप में एक बड़ी समस्या है। जो पर्यावरण प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है। ठोस अपशिष्ट पदार्थ और द्रवीय कचरे से न केवल सतही जल, वरन भूमिगत–जल भी प्रभावित होने लगा है।
3. शहरी जनसंख्या वृद्धि के कारण ऊर्जा संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। वर्तमान में इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर कृषि पर ही नहीं बल्कि शहरी और औद्योगिक क्षेत्रो पर भी होता है।
4. बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण वनाच्छादित क्षेत्र कम होता जा रहा है। यह पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। शहरों के कूड़े–करकट एवं प्लास्टिक की वस्तुओं के कारण भूमि प्रदूषण बढ़ा है। इन दोनों कारणों से भूमि का तापमान बढ़ा है। और मौसम चक्र में परिवर्तन हुआ है। यह प्राकृतिक असंतुलन सहित कई समस्याओ को जन्म दे रहा है।
5. बढ़ती जनसंख्या ने खाद्यान्नों की मांग में वृद्धि कर दी है। अतः कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग अंधाधुन्ध गति से किया जा रहा है।वर्षा जल के माध्यम से यह न केवल सतही जल, वरन भू–जल की गुणवत्ता को भी प्रभावित कर रहा है।
6. बढ़ता हुआ औद्योगीकरण, बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण और परिणाम दोनों हैं। उद्योगों से निकला हुआ धुँआ पृथ्वी के असंतुलन का कारण है। जिससे सम्पूर्ण मानव जगत का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।
7. शहरीकरण ने जहाँ भौतिक और आर्थिक पर्यावरण प्रदूषित किया है। वहीं सांस्कृतिक पर्यावरण भी इससे अछूता नहीं रहा है, इससे नैतिक तथा पारिवारिक, सांस्कृतिक मूल्यों का भी ह्रास हुआ है। प्रगतिशीलता के नाम पर विदेशी संस्कृति अपनाई जा रही है। शहरों में आपराधिक घटनाओं में वृद्धि हुई है, शहरी चकाचौंध ने सांस्कृतिक पर्यावरण को भी बुरी तरह प्रदूषित किया है।

सारणी संख्या 0.3

ध्वनि प्रदूषण(ग्रामीण,नगरीय एवं औद्योगिक क्षेत्र)

क्र.सं.	अवस्थिति ध्वनि स्तर	ध्वनिस्तर (डेसीबल)	स्त्रोत	अवस्थिति(डेसीबल)
01	ग्रामीण स्तर	20–30	रेडियो,टेलीफोन स्टूडियो	25–35
02	उपनगरीयक्षेत्र	35–40	संगीत कक्ष	30–35
03	नगरीय आवास क्षेत्र	35–40	अस्पताल, अध्ययन अध्यापन कक्ष, होटल, संगोष्ठी कक्ष	35–40

04	नगरों में आवासीय एंव व्यापारिक क्षेत्र	40–45	कचहरी कक्ष, निजी कार्यालय, पुस्तकालय	40–45
05	नगर क्षेत्र	40–45	बड़े सरकारी कार्यालय तथा बैंक	50–55
06	औद्योगिक क्षेत्र	50–60	स्टोर तथा भोजनालय	50–55

स्रोत– शर्मा गुलवीर, कुलश्रेष्ठ अलका, विश्ट आर.एस. (2009)

सारणी संख्या 0.4

शोर की अधिक आवृत्ति का स्वास्थ्य पर प्रभाव

शोर की आवृत्ति	स्वास्थ्य पर प्रभाव
80	चिड़चिड़ापन
90	श्रवण शक्ति समाप्त
110	चमड़ी पर उद्दीपन व सरसराहट
130–135	उल्टी, स्पर्श, अनुभव में कमी
150	चमड़ी पर जलन
160	संवेदनशील झिल्लियों का फटना

स्रोत

शर्मा गुलवीर, कुलश्रेष्ठ अलका, विश्ट आर.एस. (2009)

सारणी संख्या 0.5

विश्व में जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ो में)
1850 ई०	100 करोड़
1930 ई०	200 करोड़
1962 ई०	300 करोड़
1975 ई०(11.07.1987)	406 करोड़
1987 ई०(12.10.1999)	500 करोड़
2001 ई०	600 करोड़
2015 ई०	613.7 करोड़
2025 ई०	720.7 करोड़
2030 ई०	781.8 करोड़
2050 ई0	900 करोड़

स्रोत

शोध समीक्षा और मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

भारत में संसार का 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल पाया जाता है। इस पर कुल जनसंख्या का 16.7 प्रतिशत भाग निवास करता है। भारत में सन् 1991 से 2001 तक जनसंख्या लगभग 18.1 करोड़ तक बड़ी जो कनाडा, फ्रांस व जर्मनी की कुल जनसंख्या के समतुल्य है। इस शताब्दी में विश्व की जनंसख्या 1.6 अरब थी जो सन् 1960 में बढ़कर 3 अरब हो गई। सन् 1987 तक यह बढ़कर 5 अरब हुई। आज संसार की कुल जनसंख्या 6867 अरब है। एक अनुमान के अनुसार सन् 2025 तक जनसंख्या 9.039 अरब तक पहुंच जाएगी तथा 11 मई 2000 को भारत की जनसंख्या 1 अरब तक पहुँच गई। सन् 2050 क भारत दुनिया का जनसंख्या के आधार पर सबसे विख्यात देश होगा। पर्यावरणविदों के अनुसार पर पृथ्वी एक निश्चित सीमा तक ही भार सहन कर सकती है। जनसंख्या वृद्धि से पृथ्वी पर भी भार बढ़ रहा है। ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी 15 अरब जनसंख्या समूह तक का भार सहन कर सकती है।

जनसंख्या नियन्त्रण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव

1. परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार कर उसे लोकप्रिय बनाना।
2. मातृ दर में कमी लाना तथा महिला शिक्षा पर बल देना।
3. अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में क्षेत्रीय जनसंख्या नीति का अलग–अलग निर्धारण करना।
4. जनसंख्या वृद्धि के खतरों से समाज को अवगत कराना।
5. अधिक उम्र में विवाह करने हेतु कानून बनाना।
6. चीन की भांति एक बच्चे वाले परिवार को सरकारी सहायता प्रदान करने हेतु कानून बनाना।
7. पर्यावरण शिक्षा का प्रचार प्रसार कर जनमानस को जाग्रत करना।
8. प्रदूषण से होने वाली बीमारियां एवं उसके दष्प्रभाव से जनमानस को अवगत कराना।
9. जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण से बचाव के सुरक्षा उपकरणों के प्रयोग की सलाह देना।
10. उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषणकारी अवशिष्टों का समुचित उपचार एवं समापन करवाना।
11. जंगलों की कटाई से होने वाली हानि से मानव को अवगत कराना तथा पर्यावरण संरक्षण के दायित्व का निर्वाह करने हेतु जनमानस को तैयार करना। (मार्कण्डेय, कुमार, राजवैध 1999) ''जिन्दगी में रहन–सहन में सादगी आये तो फिजूल की चीजें बनाने वाले कारखाने कम होंगें और उनसे पैदा होने वाला प्रदूषण भी कम होगा। मुट्ठी भर लोगों को सकल ऐश्वर्य उपलब्ध कराने की बजाय सबकों रोटी, कपड़ा, मकान और पीने का पानी दिलवाना हमारा लक्ष्य हो तो हम प्रकृति को कम से कम पीड़ित करते हुये प्रगति कर सकेंगें''। (गोयल 1995) पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में 1989 में टोरन्टो सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए वहाँ के प्रधानमंत्री ने कहा था– हम प्रकृति के साथ बहुत खतरनाक खेल–खेल चुके हैं। अब समय आ गया है कि हम अपनी मानसिकता में परिवर्तन लायें।

प्रदूषण के प्रति विश्व चेतना

विश्व के विशेषज्ञों ने बड़ी चेतावनी दी है कि यदि प्रदूषण इसी तरह बढ़ने दिया तो एक अवस्था ऐसी आयेगी जब ताजी हवा और शुद्ध जल मिलना मुश्किल हो जाएगा। वातावरण में विषैले पदार्थ जमा होते जाएंगे और नये रोग पनपते जायेंगें और मानव जाति खतरनाक मोड़ पर पहुँच जाएगी। अनुसंधानों से यह भी पता चला है कि पर्यावरण में शोर की तीव्रता दस वर्शो में दोगुनी होती जा रही है। हमारे देश के महानगरों में पिछले बीस वर्षो में दस गुना शोर बढ़ा है। कलकत्ता, मुम्बई और दिल्ली तो सर्वाधिक शोरगुल वाले महानगरों की श्रेणी में आते है।

अतः आज के युग में शोर का चक्रव्यूह हमें चारों ओर से घेरता जा रहा है। जीवन का हर क्षेत्र शोर से घिर सा गया है। जिस तरह से यह ध्वनि प्रदूषण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। उससे ऐसा लगता है कि आने वाले समय में यह इतना विकराल रूप धारण कर लेगा कि मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। अगले पचास, सौ वर्शो में अंतरिक्ष में वायुयान इतने उड़ेगें कि 20–30 हजार की ऊँचाई तक का वातावरण विशाक्त हो जाएगा। अतः पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के साधन तो सोचने ही चाहिए पर इसमें भी अधिक आवश्यक है कि जिन विधियों के उपयोग से प्रदूषण उत्पन्न होते हों,उन्हें ही मूलतः समाप्त किया जाए। इसलिए अब हमें सभ्यता और संस्कृति के विकास को कोई नया रूप देना होगा। हमने स्वयं प्रदूषण नामक महादानव को जन्म दिया और यह दानव हमें ही त्रस्त करने की बाट जोह रहा है।

संदर्भ सूची

1. अर्न्तराष्ट्रीय विवि के सिद्धान्त के रूप में एवं सतत विकास का अधिकार, जर्नल ऑफ इण्डियन लॉ इन्टस्टीट्यूट खण्ड 29 (1987) पृ0 290 ।
2. गोयल एम0 के0 (1995) अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ0 सं0 314।
3. नौटियाल शिवानन्द (2012) संस्कृति एवं सास्कृतिक प्रदूषण, पृ0–9, नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन।
4. मार्कण्डेय, दिलीप कुमार, राजवैद्य नीलिमा, (1999) प्रकृति, पर्यावरण प्रदूषण के नियन्त्रण, नई दिल्ली, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग।
5. टोरन्टो सम्मेलन 1989।
6. Statistical outline of India (2004-05) Tata Services a limited Mumbai 2005
7. Statistical outline of India (2004-05) Tata Services a limited Mumbai 2005
8. शर्मा बी0के0 (2006) जनसंख्या नियन्त्रण द्वारा पर्यावरण सुरक्षा सम्भव, पृ0 32, हिन्द प्रिन्टर्स, बरेली, बड़ा बाजार।
9. शर्मा बी0के0 (2008) पर्यावरण विनाश के मूल में जनसूख्या विस्फोट, पृ0 183, हिन्द प्रिन्टर्स, बरेली, बड़ा बाजार।
10. शर्मा डॉ गुलवीर, कुलश्रेष्ठ डॉ. अलका, विष्ठ डॉ. आर.एस. (2009) श्री ज्ञान सागर ज्ञान श्रृंखला, मेरठ, श्री ज्ञान सागर पब्लिकेशन इण्डिया।
11. शर्मा डॉ गुलवीर, कुलश्रेष्ठ डॉ. अलका, विष्ठ डॉ. आर.एस. (2009) श्री ज्ञान सागर ज्ञान श्रृंखला, मेरठ, श्री ज्ञान सागर पब्लिकेशन इण्डिया।
12. शोध समीक्षा और मूल्यांकन,(2008) अन्तर्राश्ट्रीय शोध पत्रिका, ISSN-0974-2832 Vol. II
13. मार्कण्डेय, कुमार दिलीप, राजवैध नीलिमा, (1999), 'प्रकृति पर्यावरण प्रदूषण के नियन्त्रण, नई दिल्ली, ए. पी.एच. पब्लिशिंग।